

धर्मी पर स्वर्ग

किप्रा नदी के तट पर बसी विशाल समृद्ध नगरी थी दृंगावती। यहाँ का राजा लक्ष्मीपति न्यायप्रिय और पिता की तरह प्रजा का पालन करने वाला था। उसकी दानी कमलावती भी बहुत दयालु और परोपकारी थी। वहाँ के प्रजाजन उन्हें माता-पिता की तरह चाहते थे इतना सब होने पर भी दानी कमलावती के संतान नहीं थी। एक दिन संध्या के समय महल के झटेखे में बैठे राजा दानी बात कर रहे थे-



उस दात दानी महलों की खुली छत पर सोई हुई थी। चाँदनी दात में चारों तरफ चन्द्रमा की शीतल
चाँदनी छिटकी हुई थी। तारे आकाश में किलमिला रहे थे। ठण्डी हवा चल रही थी। दृश्य
देखते देखते दानी का छद्य आनन्द से भर गया।



तभी महाराज लक्ष्मीपति ऊपर छत पर आ गये। दानी को ध्यान में लीन देखकर वे बहुत देट तक पलंग पर बैठे रहे। अचानक उन्हें छीक आ गई। छीक से दानी का ध्यान भंग हो गया।

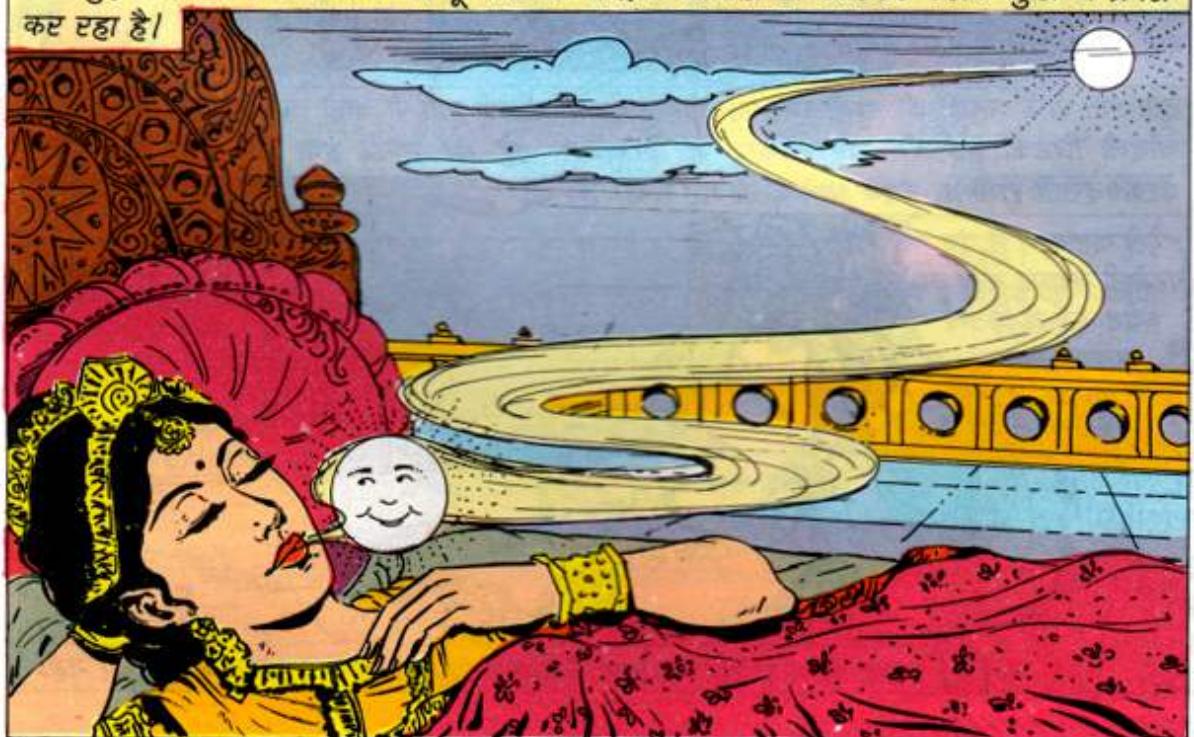


अभी थोड़ी देट पहले ही ! आपको ध्यान में लीन देखकर मैं भी चाँदनी दात की शोभा देखने लग गया।

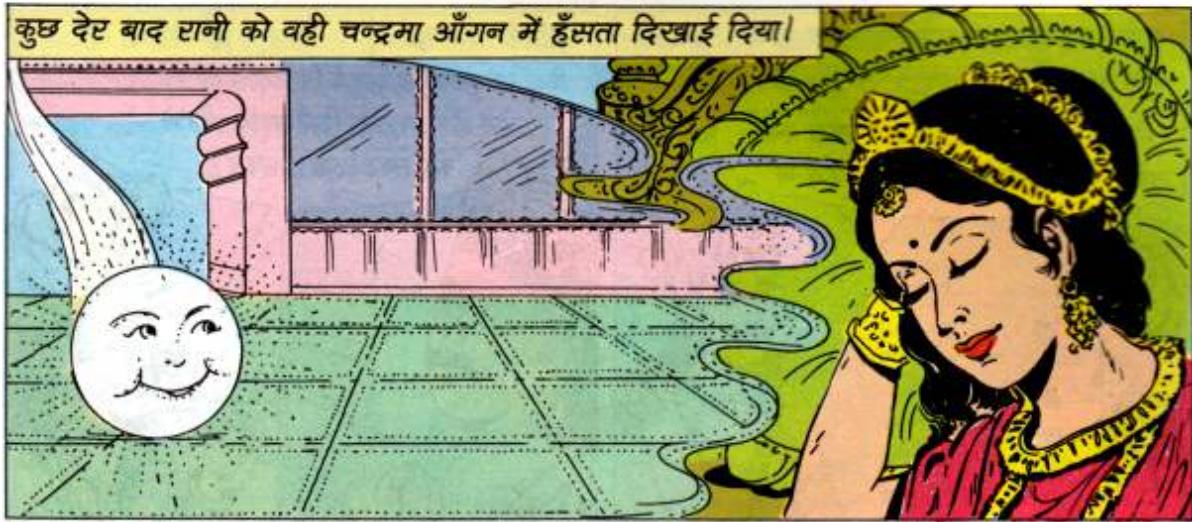


कुछ देट बातचीत करने के बाद दाना दानी सो गये।

सोते हुए दानी को स्वप्न आया कि पूर्णिमा का चन्द्रमा आकाश से उत्तरकर उसके मुख में प्रवेश कर रहा है।



कुछ देट बाद दानी को वही चन्द्रमा आँगन में हँसता दिखाई दिया।



दानी ने युकदम रोमांचित होकर आँखें खोली—



सुबह दानी ने महाराज लक्ष्मीपति को दात का स्वप्न सुनाया। दाजा प्रसन्न होकर बोले—



स्नानादि के पश्चात् दाजा ने व्योतिषी को बुलाकर दानी का स्वप्न सुनाया। व्योतिषी ने शास्त्र निकाले। लग्न कुण्डली बनाई और गणित लगाकर बताया—

